

खेती आधारित आजीविका प्रणालियाँ

इकाई : 1

भारत और विभिन्न राज्यों में कृषि की स्थिति, भारत में किसानों और ग्रामीण लोगों की आय। आजीविका - परिभाषा, अवधारणा और आजीविका शहरी और ग्रामीण क्षेत्र में पैटर्न.

भारत में कृषि की स्थिति.

- भारत की लगभग 58% आबादी की आजीविका का प्राथमिक स्रोत कृषि है। जनसंख्या। हालाँकि, इसके महत्व के बावजूद, कृषि भारत के सकल घरेलू उत्पाद में केवल 18-20% का योगदान देती है। इस क्षेत्र में कम उत्पादकता, खंडित भूमि जोत, अपर्याप्त बुनियादी ढाँचा, जलवायु भेद्यता और बाजार में उतार-चढ़ाव जैसी चुनौतियाँ हैं।
- प्रमुख फसलें और कृषि क्षेत्र:
- चावल: पश्चिम बंगाल, पंजाब, उत्तर प्रदेश, आंध्र प्रदेश और तमिलनाडु जैसे राज्यों में उगाई जाने वाली मुख्य फसल।
- गेहूँ: मुख्य रूप से पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश और हिमाचल प्रदेश में उगाया जाता है। मध्य प्रदेश.
- दालें: महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, राजस्थान और उत्तर प्रदेश में उगाई जाती हैं।
- गन्ना: उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, कर्नाटक और तमिलनाडु में खेती की जाती है।
- फल और सब्जियाँ: बागवानी भारतीय कृषि का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बनकर उभरी है, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु, गुजरात और पश्चिम बंगाल जैसे राज्य विभिन्न फलों और सब्जियों के उत्पादन में अग्रणी हैं।

कृषि में प्रमुख चुनौतियाँ:

- खंडित भूमि जोत: 86% से अधिक भारतीय किसानों के पास 2 एकड़ से भी कम भूमि है। हेक्टेयर भूमि पर खेती करने से खेती का आकार आर्थिक दृष्टि से अनुपयुक्त हो जाता है।

- जल की कमी: मानसून की बारिश पर निर्भरता कृषि को अत्यधिक प्रभावित करती है वर्षा में उतार-चढ़ाव के प्रति संवेदनशील।
- कम उत्पादकता: बड़े कार्यबल के बावजूद, कृषि उत्पादकता भारत में यह दर वैश्विक मानकों की तुलना में कम है।
- प्रौद्योगिकी तक सीमित पहुंच: आधुनिक कृषि तकनीक और कई छोटे और सीमांत किसानों के लिए उन्नत मशीनरी उपलब्ध नहीं है।
- जलवायु परिवर्तन: सूखे, बाढ़ और भूस्खलन की घटनाओं में वृद्धि बेमौसम बारिश से फसल की पैदावार और किसानों की आय पर असर पड़ रहा है।

भारत के विभिन्न राज्यों में कृषि की स्थिति

- पंजाब:
- "भारत के अन्न भंडार" के रूप में जाना जाने वाला पंजाब, उत्पादन में अग्रणी है।
गेहूं और चावल।
- राज्य की कृषि अत्यधिक मशीनीकृत है, और किसानों को इससे लाभ मिलता है।
मुख्य रूप से नहरों के माध्यम से सिंचाई की गारंटी।
- हालाँकि, धान जैसी अधिक जल खपत वाली फसलों पर अत्यधिक निर्भरता के कारण भूजल स्तर में कमी आई है।
- चुनौतियाँ: घटता जल स्तर, गिरती मृदा स्वास्थ्य, स्थिर फसल पैदावार, तथा गेहूँ-धान फसल चक्र पर अत्यधिक निर्भरता।
- उत्तर प्रदेश:
- गेहूँ, चावल और गन्ना सहित खाद्यान्न का एक प्रमुख उत्पादक।
- राज्य दूध उत्पादन में भी अग्रणी है, जो महत्वपूर्ण योगदान देता है
भारत का डेयरी क्षेत्र।
- चुनौतियाँ: खंडित भूमि जोत, कम मशीनीकरण और आधुनिक कृषि प्रौद्योगिकियों तक अपर्याप्त पहुंच।
- महाराष्ट्र:
- कपास, गन्ना, दालें और बागवानी फसलों (अंगूर, अनार और संतरे जैसे फल) का अग्रणी उत्पादक।

- राज्य ने कृषि निर्यात में उल्लेखनीय प्रगति की है।
विशेषकर फलों में।
- चुनौतियाँ: सूखाग्रस्त क्षेत्र (जैसे मराठवाड़ा और विदर्भ)
गंभीर जल संकट का सामना करना पड़ रहा है, जिससे फसल की पैदावार प्रभावित हो रही है।
- मध्य प्रदेश:
- भारत में दालों और तिलहन का सबसे बड़ा उत्पादक होने के लिए जाना जाता है।
- राज्य की कृषि अर्थव्यवस्था को खेती से मजबूती मिली है।
गेहूं, दालें, सोयाबीन और चना।
- चुनौतियाँ: अच्छी वर्षा के बावजूद सिंचाई कवरेज सीमित है, और
किसान पानी के लिए मानसून पर निर्भर रहते हैं।
- तमिलनाडु:
- चावल और बागवानी फसलों का अग्रणी उत्पादक।
- तमिलनाडु में कृषि जल की कमी और अनियमित वर्षा से प्रभावित हुई है।
- चुनौतियाँ: जल की कमी, मानसून पर निर्भरता और शहरीकरण ग्रामीण और कृषि क्षेत्रों को प्रभावित कर रहे हैं।
- पश्चिम बंगाल:
- पश्चिम बंगाल चावल, जूट और मछली का शीर्ष उत्पादक राज्य है।
- राज्य में उपजाऊ मिट्टी और गंगा तथा उसकी सहायक नदियों से प्रचुर जल संसाधन उपलब्ध हैं, लेकिन बाढ़ से अक्सर फसल की पैदावार प्रभावित होती है।
- चुनौतियाँ: बाढ़, पुरानी कृषि पद्धतियाँ और ग्रामीण गरीबी कृषि उत्पादकता के लिए चुनौती बनी हुई हैं।

भारत में ग्रामीण लोगों और किसानों की आय

- किसानों की औसत आय:
- भारत में एक कृषि परिवार की औसत मासिक आय थी
लगभग ₹10,218 (2018 राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण कार्यालय की रिपोर्ट के अनुसार)।

- इसमें मजदूरी, खेती, पशुधन और गैर-कृषि आय शामिल है व्यावसायिक गतिविधियां।
 - क्षेत्रीय भिन्नताएं: पंजाब: उच्चतम औसत मासिक आय (₹18,000 से अधिक)।
 - बिहार, झारखंड, पश्चिम बंगाल: यहां के किसानों की आय सबसे कम है औसत आय (लगभग ₹7,000-₹9,000)।
 - आय के स्रोत: खेती के अलावा, कई ग्रामीण परिवार जीवनयापन के लिए मजदूरी, धनप्रेषण और अन्य गैर-कृषि गतिविधियों पर निर्भर रहते हैं।
- ग्रामीण रोजगार और आय वितरण:
- भारत की लगभग 70% ग्रामीण आबादी अपनी आजीविका के लिए कृषि पर निर्भर है। ग्रामीण आय कई स्रोतों से आती है: कृषि (खेती और पशुधन)।
 - ग्रामीण श्रम बाजार (गैर-कृषि गतिविधियाँ जैसे निर्माण, परिवहन)।
 - सार्वजनिक क्षेत्र में रोजगार (मनरेगा जैसी सरकारी योजनाएं)।
 - मनरेगा (महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम) ग्रामीण परिवारों को 100 दिनों का गारंटीकृत रोजगार प्रदान करता है, जिससे ग्रामीण आय स्थिरता में सुधार होता है।

आजीविका - परिभाषा, अवधारणा और शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में आजीविका पैटर्न क्षेत्रों

आजीविका की परिभाषा

- आजीविका से तात्पर्य ऐसे साधनों से है जिनके माध्यम से कोई व्यक्ति या परिवार जीविका चलाता है। इसमें वे संसाधन (जैसे कौशल, ज्ञान और संपत्ति) और वे गतिविधियाँ (जैसे रोजगार, कृषि या व्यापार) शामिल हैं जिन्हें लोग आय अर्जित करने या अपने जीवन को सहारा देने वाले संसाधन प्राप्त करने के लिए अपनाते हैं।
- चेम्बर्स और कॉनवे (1992) ने आजीविका को "जीवनयापन के लिए आवश्यक क्षमताओं, परिसंपत्तियों (भौतिक और सामाजिक संसाधन दोनों) और गतिविधियों" के रूप में परिभाषित किया है।

आजीविका की अवधारणा

- आजीविका की अवधारणा आय सृजन से कहीं आगे जाती है और लोगों द्वारा जीवन की आवश्यक चीजों जैसे भोजन, पानी, आश्रय, कपड़े और शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा तक पहुँच को सुरक्षित करने के तरीके की अधिक समग्र समझ पर केंद्रित होती है। इसमें सामाजिक, सांस्कृतिक और पर्यावरणीय आयाम भी शामिल हैं।

- आजीविका अवधारणा के प्रमुख घटकों में शामिल हैं:

- संपत्तियाँ: मूल और अमूल संसाधन जिन तक व्यक्तियों या परिवारों की पहुँच होती है। इनमें भूमि, पशुधन, नकदी, कौशल, सामाजिक नेटवर्क और शिक्षा शामिल हो सकते हैं।

- गतिविधियाँ: विशिष्ट क्रियाएँ जो व्यक्ति या परिवार अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए करते हैं, जैसे खेती, व्यापार, मजदूरी या उद्योगों में काम करना।

- क्षमताएँ: व्यक्तियों या परिवारों की अपनी परिसंपत्तियों का प्रभावी ढंग से उपयोग करके आय उत्पन्न करने और अपनी आजीविका सुरक्षित करने की क्षमता। इसमें ज्ञान, कौशल, स्वास्थ्य और सेवाओं तक पहुँच शामिल हो सकती है।

- ग्रामीण क्षेत्रों में आजीविका पैटर्न

- ग्रामीण क्षेत्रों की विशेषता प्राकृतिक संसाधनों और कृषि गतिविधियों पर अधिक निर्भरता है।

- ग्रामीण क्षेत्रों की विशेषता प्राकृतिक संसाधनों और कृषि गतिविधियों पर अधिक निर्भरता है। प्राथमिक आजीविका पैटर्न में शामिल हैं।

- कृषि: ग्रामीण क्षेत्रों में खेती प्रमुख आजीविका गतिविधि है, जहाँ परिवार चावल, गेहूँ, मक्का और कपास और गन्ना जैसी विभिन्न नकदी फसलों की खेती में लगे हुए हैं।

- पशुपालन: कई ग्रामीण परिवार मवेशी, भेड़, बकरी और मुर्गी सहित पशुधन पालन करके अपनी आय में वृद्धि करते हैं।

- मत्स्य पालन और वानिकी: तटीय और वन क्षेत्रों में, मछली पकड़ना और वन-आधारित गतिविधियाँ आजीविका के प्रमुख विकल्प हैं। इसमें वन उत्पादों (जैसे लकड़ी, ईंधन की लकड़ी, औषधीय पौधे और शहद) का संग्रह शामिल है।

- जलीय कृषि: कुछ ग्रामीण क्षेत्रों में मछली पालन एक व्यवहार्य आजीविका विकल्प बन रहा है।

- ग्रामीण गैर-कृषि रोजगार:

- कारीगरी गतिविधियाँ: कई ग्रामीण क्षेत्रों में पारंपरिक शिल्प, बुनाई, मिट्टी के बर्तन और हथकरघा उत्पादन रोजगार प्रदान करते हैं।
- आकस्मिक श्रम: कई ग्रामीण परिवार निर्माण, परिवहन और लघु-स्तरीय विनिर्माण में आकस्मिक मजदूर के रूप में काम करके अपनी आय में वृद्धि करते हैं।
- ग्रामीण उद्यम: छोटी दुकानें, मिलिंग इकाइयां, मरम्मत सेवाएं और अन्य उद्यम ग्रामीण आजीविका में योगदान करते हैं।

शहरी क्षेत्रों में आजीविका पैटर्न

- औपचारिक रोजगार:
- उद्योग और विनिर्माण: शहरी कार्यबल का एक बड़ा हिस्सा विनिर्माण इकाइयों, कपड़ा उद्योग, इलेक्ट्रॉनिक्स और अन्य औद्योगिक क्षेत्रों में कार्यरत है।
- सेवा क्षेत्र: शहरी अर्थव्यवस्था तेजी से सेवा-संचालित होती जा रही है, जिसमें जनसंख्या का एक महत्वपूर्ण हिस्सा वित्त, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा, खुदरा और आईटी सेवाओं जैसे क्षेत्रों में कार्यरत है।
- सार्वजनिक क्षेत्र की नौकरियाँ: शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा, कानून प्रवर्तन और नगरपालिका सेवाओं सहित सरकारी रोजगार कई शहरी परिवारों के लिए आजीविका का एक स्थिर स्रोत है।
- सार्वजनिक क्षेत्र रोजगार और योजनाएँ:
- महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम (एमजीएनआरजीए) जैसे कार्यक्रम ग्रामीण परिवारों को प्रतिवर्ष निश्चित दिनों के लिए गारंटीकृत रोजगार प्रदान करते हैं, जिससे आय सृजन के लिए एक विकल्प सुनिश्चित होता है।
- ग्रामीण बुनियादी ढांचे (सड़क, सिंचाई, बिजली) में सुधार पर केंद्रित सरकारी योजनाएं भी रोजगार के अवसर पैदा करती हैं।
- स्वरोजगार और उद्यमिता:
- लघु एवं मध्यम उद्यम (एसएमई): शहरी क्षेत्र स्वरोजगार के अवसर प्रदान करते हैं, जिनमें छोटी दुकानें चलाना, दर्जी का काम, बढ़ईगरी, मरम्मत सेवाएं और अन्य उद्यमशील उपक्रम शामिल हैं।

- ऑनलाइन और गिग इकॉनमी: प्रौद्योगिकी और डिजिटल प्लेटफार्मों के विकास ने शहरी क्षेत्रों में नए आजीविका पैटर्न पेश किए हैं, जिनमें फ्रीलांस कार्य, गिग इकॉनमी नौकरियां (जैसे खाद्य वितरण और राइडशेयरिंग) और ऑनलाइन व्यवसाय शामिल हैं।

युनिट 2

कृषि आजीविका प्रणाली (एएलएस), अर्थ, दृष्टिकोण और रूपरेखा।

- कृषि आजीविका प्रणाली (एएलएस) कृषि गतिविधियों के प्रबंधन के लिए एकीकृत और समग्र दृष्टिकोण को संदर्भित करती है जो व्यक्तियों और समुदायों की आर्थिक और सामाजिक भलाई में योगदान करती है। यह प्रणाली ग्रामीण क्षेत्रों में महत्वपूर्ण है जहाँ कृषि आय, खाद्य सुरक्षा और सांस्कृतिक पहचान का प्राथमिक स्रोत है।

कृषि आजीविका प्रणाली (एएलएस) की परिभाषा

- कृषि आजीविका प्रणाली (एएलएस) में विभिन्न कृषि-आधारित गतिविधियाँ और रणनीतियाँ शामिल हैं, जिन्हें परिवार और समुदाय अपनी आजीविका सुरक्षित करने के लिए अपनाते हैं। इसमें खेती की गतिविधियाँ, आय विविधीकरण रणनीतियाँ, बाज़ारों तक पहुँच, इनपुट और सहायता सेवाएँ शामिल हैं, जो उन व्यक्तियों की जीवन स्थितियों को आकार देती हैं जो अपनी आजीविका के लिए कृषि पर निर्भर हैं।

जीविका.

एएलएस के मुख्य घटक

- प्राकृतिक संसाधन
- मानव संसाधन
- वित्तीय संसाधन
- सामाजिक और संस्थागत समर्थन
- भौतिक मूलद्रांचा
- बाजार और व्यापार

कृषि आजीविका प्रणालियों के प्रति दृष्टिकोण

कृषि प्रणाली दृष्टिकोण:

यह दृष्टिकोण फसलों, पशुधन, मिट्टी, पानी और सामाजिक-आर्थिक कारकों के बीच परस्पर क्रियाओं पर विचार करते हुए खेत को एक समग्र प्रणाली के रूप में देखता है। इसका उद्देश्य टिकाऊ उत्पादकता के लिए संसाधनों के उपयोग को अनुकूलित करना है।

सतत आजीविका दृष्टिकोण (एसएलए):

एसएलए आजीविका को व्यापक सामाजिक-आर्थिक संदर्भ में देखता है, तथा इस बात पर ध्यान केंद्रित करता है कि लोग आजीविका की रणनीति विकसित करने और कमजोरियों को कम करने के लिए परिसंपत्तियों (प्राकृतिक, वित्तीय, मानवीय, सामाजिक, भौतिक) का उपयोग कैसे करते हैं।

कृषि-पारिस्थितिकी दृष्टिकोण:

यह दृष्टिकोण पारिस्थितिकी सिद्धांतों को कृषि प्रणालियों में एकीकृत करता है। यह कृषि पारिस्थितिकी प्रणालियों की लचीलापन और उत्पादकता बढ़ाने के लिए जैव विविधता, जैविक इनपुट और पारंपरिक ज्ञान को बढ़ावा देता है।

मूल्य श्रृंखला दृष्टिकोण:

इस दृष्टिकोण का उद्देश्य छोटे किसानों को बाजारों से जोड़कर, इनपुट तक पहुंच में सुधार करके और मूल्य संवर्धन में वृद्धि करके, उत्पादन से लेकर विपणन तक संपूर्ण कृषि मूल्य श्रृंखला में सुधार करना है।

एकीकृत ग्रामीण विकास दृष्टिकोण:

यह दृष्टिकोण कृषि विकास को अन्य ग्रामीण क्षेत्रों (स्वास्थ्य, शिक्षा, बुनियादी ढांचे) के साथ जोड़ता है ताकि ऐसी सहक्रियाएं बनाई जा सकें जो ग्रामीण समुदायों के समग्र कल्याण में सुधार ला सकें।

- जलवायु-स्मार्ट कृषि (सीएसए): सीएसए का उद्देश्य कृषि उत्पादकता और आय में वृद्धि करना, जलवायु परिवर्तन के प्रति लचीलापन बनाना और जलवायु-अनुकूल प्रथाओं को बढ़ावा देकर ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करना है।

कृषि आजीविका प्रणाली की रूपरेखा

- संपत्ति: परिवार पाँच प्रकार की पूंजी पर निर्भर करते हैं: प्राकृतिक, भौतिक, वित्तीय, सामाजिक और मानवीय। इन परिसंपत्तियों का उपयोग आजीविका में सुधार के लिए रणनीति बनाने में किया जाता है।
- भेद्यता संदर्भ: जलवायु परिवर्तनशीलता, आर्थिक अस्थिरता, नीतिगत परिवर्तन और बाजार में उतार-चढ़ाव जैसे कारक जो आजीविका को प्रभावित करते हैं और उस वातावरण को आकार देते हैं जिसमें परिवार काम करते हैं।
- संरचनाओं और प्रक्रियाओं में परिवर्तन: इनमें सरकारी संस्थान, निजी क्षेत्र के अभिनेता, गैर-सरकारी संगठन (एनजीओ) और अंतर्राष्ट्रीय एजेंसियां शामिल हैं जो संसाधन प्रदान करती हैं, नीतियों को लागू करती हैं और एएलएस परिणामों को प्रभावित करने वाली सेवाएं प्रदान करती हैं।
- आजीविका रणनीतियाँ: ये विभिन्न गतिविधियाँ और विकल्प हैं जो लोग आजीविका लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए अपनाते हैं, जिनमें फसल उत्पादन, पशुधन पालन, मजदूरी और गैर-कृषि गतिविधियों के माध्यम से आय विविधीकरण शामिल हैं।
- आजीविका परिणाम: एएलएस रणनीतियों के परिणामों को बढ़ी हुई आय, खाद्य सुरक्षा, कम हुई भेद्यता, स्थायी संसाधन प्रबंधन और बेहतर कल्याण के संदर्भ में मापा जाता है।

निष्कर्ष

- कृषि आजीविका प्रणाली (एएलएस) एक जटिल और बहुआयामी अवधारणा है जो कृषि उत्पादन, सामाजिक-आर्थिक कारकों और स्थिरता संबंधी विचारों को एकीकृत करती है। विभिन्न दृष्टिकोणों और रूपरेखाओं के माध्यम से, एएलएस ग्रामीण समुदायों की आजीविका को बढ़ाने, लचीलापन, पर्यावरण संरक्षण और न्यायसंगत विकास सुनिश्चित करने का प्रयास करता है।

यह प्रणाली गतिशील है, जो बदलती पर्यावरणीय, आर्थिक और सामाजिक परिस्थितियों के अनुरूप ढलकर कृषि पर निर्भर आबादी के लिए एक स्थायी मार्ग उपलब्ध कराती है।

धन्यवाद

कृषि प्रणालियों और कृषि आधारित आजीविका प्रणालियों की परिभाषा भारत में प्रचलित कृषि प्रणालियाँ आजीविका में योगदान दे रही हैं।

कृषि प्रणालियों की परिभाषा: कृषि प्रणालियों को मिट्टी, पौधों, जानवरों, औजारों, बिजली, श्रम, पूंजी और अन्य इनपुट के एक जटिल परस्पर संबंधित मैट्रिक्स के रूप में परिभाषित किया जा सकता है, जिसे किसान परिवारों द्वारा नियंत्रित किया जाता है। इन्हें प्राकृतिक संसाधन आधार और पर्यावरण की गुणवत्ता को बनाए रखने या सुधारने के साथ-साथ परिवार के विविध उद्देश्यों और जरूरतों को पूरा करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। कृषि प्रणालियाँ फसलों, पशुधन, जलीय कृषि, वानिकी और कृषि-वानिकी को एकीकृत करती हैं, जिसका उद्देश्य संसाधन उपयोग दक्षता को अनुकूलित करना, कृषि उत्पादकता में सुधार करना और कृषि आय में वृद्धि करना है।

कृषि प्रणालियों के प्रमुख तत्वों में शामिल हैं:

- कृषि-जलवायु परिस्थितियाँ: मिट्टी, पानी और जलवायु, स्थलाकृति।
- जैविक कारक: फसलें, पशुधन, पेड़ और उनकी परस्पर क्रिया।
- आर्थिक और सामाजिक कारक: श्रम, बाजार पहुंच, घरेलू आकार और उद्देश्य।

खेती-आधारित आजीविका प्रणालियाँ: खेती-आधारित आजीविका प्रणालियाँ ग्रामीण परिवारों द्वारा अपनाई गई आजीविका रणनीतियों को संदर्भित करती हैं जो कृषि और संबंधित गतिविधियों पर केंद्रित होती हैं। इन प्रणालियों में, कृषि भोजन, आय और रोजगार हासिल करने का प्राथमिक साधन है। ये परिवार पशुपालन जैसे संबद्ध क्षेत्रों में भी विविधता लाते हैं,

मत्स्य पालन, वानिकी और गैर-कृषि ग्रामीण गतिविधियों में भाग लेकर अपनी आय बढ़ा सकते हैं और जोखिम कम कर सकते हैं।

- आजीविका प्रणालियाँ कई आयामों पर विचार करती हैं जैसे:
- प्राकृतिक पूंजी (भूमि, जल, जैव विविधता)।
- भौतिक पूंजी (बुनियादी ढांचा, उपकरण)।
- मानव पूंजी (कौशल, शिक्षा)।
- सामाजिक पूंजी (संबंध, नेटवर्क)।
- वित्तीय पूंजी (आय, ऋण पहुंच)।

भारत में प्रचलित कृषि प्रणालियाँ: कृषि-जलवायु परिस्थितियों, सामाजिक-आर्थिक कारकों और सांस्कृतिक प्रथाओं में भिन्नता के कारण भारत की कृषि प्रणालियाँ विविध हैं। भारत में प्रचलित प्रमुख कृषि प्रणालियाँ इस प्रकार हैं:

- **फसल आधारित कृषि प्रणालियाँ:**

- चावल-गेहूँ प्रणाली: पंजाब, हरियाणा जैसे उत्तरी राज्यों में आम और उत्तर प्रदेश। चावल खरीफ सीजन (मानसून) के दौरान उगाया जाता है, और गेहूँ रबी सीजन (सर्दियों) के दौरान उगाया जाता है। यह प्रणाली भारत में खाद्य सुरक्षा में योगदान देती है।

- चावल आधारित प्रणालियाँ: पश्चिम बंगाल, ओडिशा, तमिलनाडु और आंध्र प्रदेश जैसे पूर्वी और दक्षिणी राज्यों में प्रचलित हैं।

चावल को अन्य फसलों जैसे दालों, तिलहनों और सब्जियों के साथ उगाया जाता है।

- बाजरा आधारित प्रणालियाँ: राजस्थान जैसे अर्ध-शुष्क क्षेत्रों में पाई जाती हैं।

कर्नाटक और महाराष्ट्र के कुछ हिस्से, जहां ज्वार, बाजरा और रागी जैसे मोटे अनाज मुख्य फसलें हैं।

- गन्ना आधारित प्रणाली: महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, झारखंड, झारखंड, मध्य प्रदेश, राजस्थान ...

प्रदेश और कर्नाटक में गन्ना एक प्रमुख नकदी फसल है और

किसानों की आय में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

- मिश्रित कृषि प्रणाली:-

- फसल-पशुधन प्रणाली: भारत के कई हिस्सों में, छोटे और सीमांत किसान फसल की खेती और पशुपालन के संयोजन पर निर्भर हैं। उदाहरण के लिए, गुजरात और राजस्थान जैसे राज्यों में, किसान आय के स्रोतों में विविधता लाने और दूध, मांस और खाद की घरेलू ज़रूरतों को पूरा करने के लिए फसल उगाते हैं और पशुधन (गाय, भैंस, बकरी) पालते हैं।

- कृषि वानिकी प्रणालियाँ: ये प्रणालियाँ पेड़ों को फसलों के साथ एकीकृत करती हैं और

पशुधन। दक्षिणी और पूर्वोत्तर भारत में किसान

कृषि वानिकी, जिसमें फलों के पेड़ों (आम, नारियल, केला) को चावल और सब्जियों जैसी मुख्य फसलों के साथ जोड़ा जाता है। ये प्रणालियाँ अधिक टिकाऊ हैं और खेत की लचीलापन बढ़ाती हैं।

- बागवानी आधारित प्रणालियाँ:-

- फल और सब्जी की खेती: भारत आम, केला, पपीता, खट्टे फल, आलू, टमाटर और प्याज जैसे फलों और सब्जियों का अग्रणी उत्पादक है। बागवानी आधारित प्रणालियाँ केरल, तमिलनाडु, महाराष्ट्र और पश्चिम बंगाल जैसे राज्यों में प्रचलित हैं। ये प्रणालियाँ उच्च रिटर्न प्रदान करती हैं, हालाँकि वे अधिक श्रम-गहन हैं और मूल्य में उतार-चढ़ाव के प्रति संवेदनशील हैं।

- मसाला आधारित प्रणालियाँ: केरल, कर्नाटक और तमिलनाडु जैसे राज्य इलायची, काली मिर्च, अदरक और हल्दी जैसे मसालों की खेती के लिए जाने जाते हैं। ये उच्च मूल्य वाली फसलें घरेलू खपत और निर्यात दोनों में योगदान देती हैं।

- पशुधन आधारित कृषि प्रणालियाँ:-

- डेयरी फार्मिंग: भारत दुनिया का सबसे बड़ा दूध उत्पादक देश है और लाखों ग्रामीण परिवारों के लिए डेयरी फार्मिंग एक महत्वपूर्ण आजीविका है। उत्तर प्रदेश, पंजाब, गुजरात और महाराष्ट्र जैसे राज्यों में डेयरी आधारित प्रणालियाँ प्रमुख हैं।

- पोल्ट्री फार्मिंग: तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश और पश्चिम बंगाल जैसे राज्यों में पोल्ट्री एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है। अंडे और पोल्ट्री मांस की बढ़ती मांग छोटे किसानों को स्थिर आय प्रदान करती है।

- **मत्स्य-आधारित प्रणालियाँ:**

- अंतर्देशीय मत्स्य पालन: नदियों, झीलों और तालाबों के अपने विशाल नेटवर्क के साथ, भारत में एक अच्छी तरह से स्थापित अंतर्देशीय मत्स्य पालन प्रणाली है। पश्चिम बंगाल, असम, आंध्र प्रदेश और ओडिशा जैसे राज्य मीठे पानी की मछली उत्पादन में प्रमुख हैं।

- समुद्री मत्स्य पालन: केरल, तमिलनाडु, महाराष्ट्र और गुजरात में जीवंत समुद्री मछुआरा समुदाय हैं। मत्स्य पालन इन क्षेत्रों में आजीविका और पोषण सुरक्षा दोनों में योगदान देता है।

- **एकीकृत कृषि प्रणाली**

- ये प्रणालियाँ खेती के विभिन्न घटकों, जैसे कि फसलें, पशुधन, जलीय कृषि और कृषि वानिकी को जोड़ती हैं, ताकि कृषि उत्पादकता और स्थिरता को बढ़ाया जा सके। संसाधन उपयोग दक्षता को अधिकतम करने, मिट्टी की उर्वरता में सुधार करने और इनपुट लागत को कम करने के लिए भारत के कई हिस्सों में एकीकृत कृषि प्रणालियों को बढ़ावा दिया जा रहा है।

आजीविका में कृषि प्रणालियों का योगदान

भारत:

- रोजगार सृजन: कृषि और उससे जुड़ी गतिविधियाँ भारत की लगभग 60% ग्रामीण आबादी को रोजगार प्रदान करती हैं। कृषि प्रणालियाँ खेत पर काम करने वाले और खेत से बाहर ग्रामीण रोजगार दोनों को बढ़ावा देती हैं।

- खाद्य सुरक्षा: कृषि प्रणालियाँ, विशेषकर चावल-गेहूं और अन्य अनाज आधारित प्रणालियाँ, भारत में खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण हैं।

इन प्रणालियों की बदौलत भारत खाद्यान्न के मामले में काफी हद तक आत्मनिर्भर है।

- आय विविधीकरण: मिश्रित कृषि प्रणालियाँ और बागवानी आधारित

ये प्रणालियाँ किसानों को उनकी आय के स्रोतों में विविधता लाने में मदद करती हैं। पशुधन, मत्स्य पालन या कृषि वानिकी को शामिल करके, किसान एक ही फसल या उद्यम पर अपनी निर्भरता कम कर देते हैं, जिससे जोखिम कम हो जाता है।

- स्थिरता और संसाधन संरक्षण: एकीकृत कृषि प्रणालियाँ फसल चक्र, जैविक खेती और मृदा संरक्षण जैसी टिकाऊ कृषि पद्धतियों को बढ़ावा देती हैं। इससे मृदा उर्वरता को बनाए रखने और प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा करने में मदद मिलती है।

- आर्थिक विकास: बागवानी और डेयरी फार्मिंग जैसी उच्च मूल्य वाली कृषि प्रणालियाँ ग्रामीण अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं। ये प्रणालियाँ उच्च रिटर्न प्रदान करती हैं और छोटे किसानों को अपने जीवन स्तर को बेहतर बनाने में सक्षम बनाती हैं।

- महिला सशक्तिकरण: पशुधन आधारित कृषि प्रणाली और बागवानी में महिलाओं की दैनिक गतिविधियों में महत्वपूर्ण भागीदारी होती है। ये प्रणालियाँ ग्रामीण महिलाओं के लिए आय सृजन के अवसर प्रदान करती हैं और उनके सशक्तिकरण में योगदान देती हैं।

- निर्यात आय: उच्च मूल्य वाली नकदी फसलें (गन्ना, मसाले, कपास और बागवानी) पैदा करने वाली कृषि प्रणालियाँ भारत की निर्यात आय में योगदान करती हैं और इनमें शामिल किसानों की आजीविका को बढ़ाती हैं।

क्षेत्र.

- निष्कर्ष:

भारत में कृषि प्रणालियाँ ग्रामीण परिवारों की आजीविका के लिए महत्वपूर्ण हैं, जो भोजन, आय और रोजगार प्रदान करती हैं। भारत की विविध कृषि-जलवायु परिस्थितियाँ विभिन्न प्रकार की कृषि प्रणालियों का समर्थन करती हैं, जिनमें से प्रत्येक को क्षेत्रीय आवश्यकताओं के अनुरूप बनाया गया है। फसल आधारित प्रणालियों से लेकर एकीकृत कृषि दृष्टिकोणों तक, भारतीय कृषि ग्रामीण विकास और स्थिरता का एक प्रमुख चालक बनी हुई है। जलवायु परिवर्तन, जनसंख्या वृद्धि और बाजार की अस्थिरता से उत्पन्न बढ़ती चुनौतियों को देखते हुए, भारत के ग्रामीण समुदायों की दीर्घकालिक समृद्धि सुनिश्चित करने के लिए विविध और टिकाऊ कृषि प्रणालियों को बढ़ावा देने की सख्त आवश्यकता है।